

लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने 'सर्न के महाप्रयोग लैब को देखा'

जेनेवा (स्विट्ज़रलैंड), 17 अक्टूबर 2014 : जेनेवा (स्विट्ज़रलैंड) के पास स्थित, ब्रह्मांड का सतत अध्ययन करने के लिए बनी, दुनिया की सबसे बड़ी लैब को लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन और उनके साथ वहां इंटर पार्लियामेंट्री यूनियन में भाग लेने गए भारतीय डेलीगेशन के सदस्यों ने देखा। यहां आने वाले 20 सालों में सतत तौर पर ब्रह्मांड के रहस्यों की खोज की जाएगी जिससे आने वाले कल में मानवता के विकास के लिए महत्वपूर्ण जानकारियां दी जा सकें। इसमें कई छोटी-बड़ी खोजे नियमित तौर पर हो रही हैं जो पूरी दुनिया के वैज्ञानिकों का साझा प्रयास है। सर्न की इसी प्रयोगशाला में 'वर्ल्ड वाइड वेब' का अविष्कार हुआ। मेरिन में मुख्य स्थान में एक बड़ा कंप्यूटर सेंटर है जिसमें एक्सपेरिमेंटल डाटा के विश्लेषण के लिए बहुत अच्छी डाटा प्रोसेसिंग सुविधाएँ हैं। ये सुविधाएँ अन्य शोधार्थियों को उपलब्ध करने के लिए यह जगह हमेशा से एक प्रमुख वाइड एरिया नेटवर्किंग केंद्र रही है। लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती महाजन ने कहा कि भारत के लिए यह गौरव की बात है कि देश के इतने सारे खास तौर पर युवा भी इतना बड़ा काम कर रहे हैं।

लोक सभा अध्यक्ष को संस्थान की डॉ. कर्स्टिन बोरास ने पूरी लैब का दौरा करवाया। जमीन से करीब 90- 100 मीटर नीचे मेगा टनल चार सेंटर्स में यह एक लैब भी है। इस रिसर्च प्रोजेक्ट से बड़ी संख्या में युवा भारतीय साइंटिस्ट जुड़े हैं। यहां कई ऐसे प्रयोग होते हैं, जिसमें बाहरी अंतरिक्ष से कम -271.3 डिग्री तापमान रखना होता है। इस पूरे प्रोजेक्ट में लगभग 2850 साइंटिस्ट्स, 850 इंजीनियर्स काम कर रहे हैं। भारत से अर्चना शर्मा और प्रशांत सर्न की मुख्य लैब से जुड़े हैं। हजारों की संख्या में स्टूडेंट्स विजिट करते हैं। छह सौ से अधिक यूनिवर्सिटीज और वहां पढ़ रहे रिसर्चस्कॉलर्स के लिए यह देखने, सीखने और प्रयोग करने की जगह है।

दुनिया के सबसे बड़े 'द लार्ज हैड्रॉन कॉलिडर' को स्पीकर और पार्लियामेंट्री डेलीगेशन के सदस्यों को नजदीक से देखने और समझने का अवसर मिला। यह दुनिया का सबसे शक्तिशाली पार्टिकल एक्सीलरेटर है। सन 2008 से काम कर रहा है। इस 'एलएचसी' यूनिट में जमीन के नीचे 27 किलोमीटर की रिंग है। जिसमें सुपर कंडक्टिंग मैग्नेट्स लगे हुए हैं। एक्सीलरेटर के कंट्रोलर्स, उसके संचालन और टेक्निकल इंफ्रास्ट्रक्चर की कंट्रोलिंग 'सर्न कंट्रोल सेंटर' से होती है। यहां से सुपर कंडक्टिंग मैग्नेट्स वाली 27 किलोमीटर की रिंग के चार विभिन्न स्थानों पर बीम्स भेजी जाती हैं। जहां ये वेक्स आपस में टकराती हैं। इन चार जगहों में 'सीएमएस' भी एक है। सर्न की प्रवक्ता डॉ. कर्स्टिन ने इस पूरे प्रयोग की और लैब्स की विशेषताओं को विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि इस पूरे प्रोजेक्ट में भारत का बड़ा योगदान है। बड़ी संख्या में एक्सीलरेटर, मशीन्स और इंस्टालेशन के लिए उच्च गुणवत्ता का सामान लगा है। यहां तक कि

मेगा कोलॉइडिंग स्टेशन को जिस बेस पर इनस्टॉल किया है, वह भारत में ही बने हैं। इसे इंदौर स्थित राजा रमन्ना सेंटर फॉर एडवांस टेक्नोलॉजी में तैयार किया है।

वहां शोध के लिए गए टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ़ फंडामेंटल रिसर्च के फैकल्टी डॉ. तारिक अजीज़ के साथ और वहां के छात्रों से भी श्रीमती महाजन ने मुलाकात की। उन्होंने कहा कि हमारे युवा चेहरों को शोध के क्षेत्र में भी आगे देखकर प्रसन्नता होती है। इस मेगा रिसर्च प्रोजेक्ट में जुड़कर अपने योगदान से वे देश का नाम ऊंचा कर रहे हैं। डॉ. कस्टिन ने बताया कि भारतीय वैज्ञानिक बेहद दक्ष और अनुशासित हैं। वे छोटी उम्र भी परिपक्व सोच रखते हैं। इनोवेशन के मामले में आगे है।